Hindustan, dated 13.03.2021

अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली के छात्रों ने किया शोध, लॉकडाउन के बाद बालकनी संवारने को प्राथमिकता दे रहे दिल्लीवाले

कोरोना काल में लोगों का बालकनी से लगाव बढ़ा

अध्ययन

जई दिल्ली | मनोज भट्ट

कोरोना काल में घरों की बालकनी से दिल्लीवालों का लगाव बढ़ा है। लॉकडाउन के दौरान लागू बंदी के बाद दिल्ली के लोग अपनी बालकनी को संवारने में प्राथमिकता दे रहे हैं।

अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली (एयूडी) के एमए अर्बन स्टडीज के दूसरे वर्ष के छात्रों द्वारा स्टूडियो प्रोजेक्ट के तहत किए गए एक अध्ययन में यह नतीजे सामने आए हैं। एयूडी स्टूडियो प्रोजेक्ट के संयोजक व अर्बन स्टडीज विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रोहित नेगी के अनुसार, यह अध्ययन कोरोना महामारी के दौरान शहरी स्थानों में जीवन और अर्थव्यवस्था पर आधारित है। इसमें छात्रों के दलों ने अलग-अलग पहलुओं में यह अध्ययन किया। इस दौरान छात्रों के एक दल ने पाया कि कोरोना काल के दौरान दिल्लीवालों के जीवन में बालकनी और छत की परिभाषा बदली है। प्रोजेक्ट से जुड़ी इंटीरियर डिजायनर हर्षिता वत्स के मुताबिक पहले जो बालकनी उपेक्षित रहती थी, कोरोना काल में लोगों का उसकी तरफ लगाव बढ़ा है। लोग बालकनी को लिविंग रूम की तरह विकसित करने को तरजीह दे रहे हैं।

पहले स्टोर की तरह प्रयोग होता था

एयूडी स्टूडियो प्रोजेक्ट के संयोजक व अर्बन स्टडीज विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रोहित नेगी के अनुसार अधिकांश दिल्लीवाले पहले बालकनी का प्रयोग स्टोर रूम की तरह करते थे। अध्ययन के नतीजों के मुताबिक सामान्य जन के जीवन में बालकनी का महत्व बढ़ा है। अध्ययन में शामिल 55 फीसदी लोग बालकनी का प्रयोग निजी कामों के लिए करने लगे हैं। वहीं, 45 फीसदी लोगों के लिए बालकनी घर का एकमात्र ऐसा स्थान बन कर उभरा है, जहां वह शांति से बैठ कर साफ हवा, धूप ले सकते थे।

पहले | बाद में

अध्ययन के दौरान शामिल एक घर की बालकनी के पहले और बाद की स्थिति। • हिन्दुस्तान

55 % लोग बालकनी का प्रयोग गुणवत्तापूर्ण निजी समय व्यतीत करने में कर रहे

45 % लोगों के लिए बालकनी ऐसा स्थान बनी जहां वह शांति से बैठ सकते थे।

कोरोना काल में एयूडी के अर्बन स्टडीज का स्टूडियो प्रोजेक्ट चुनौतीपूर्ण था, लेकिन छात्र और शिक्षकों ने सामाजिक दूरी के साथ ही कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए इसे पूरा किया है। उम्मीद है कि अध्ययन के नतीजे दिल्ली में हो रहे बदलावों को समझने में मददगार होंगे।

- प्रो. अनु लाठर, कुलपति, एयूडी